देवि दुःख हारिणी

देवि दुःख हारिणी-तारिणी महेश ह्रदयवासिनी,

जय जय जगवन्दिनी मा ॥

सुरासुरनर सबार् पूजिता, आगम निगमे श्रिजनकारिनी

ज्ञानदा वरदा सुखदा मोक्षदा

तुमि मा आनन्द जय परायनी ।

भैरवी भवानी नगेन्द्रनन्दिनि, नागनागपाशा घोरनिनादिनी

ज्ञनेन्द्र उपेन्द्र योगेन्द्रादि कतो

चरने पोरिया दिवश रजनी ।

गुरुमुखे शुनि तुमि मा भवानी, आद्याशक्ति शिवे सोबार जननी

मा-मा बोले डाके मा तोमारे

ता मा तोमारे मा बोलिये जानि ।

मजलो आमर मन-भ्रमरा श्यमापद नील कमले ।

(श्यमापद नील कमले, कालीपद नील कमले)

जत विशयमधू तुच्छ हलो कामादि कुसुम सकले ॥

चरण कालो भ्रमर कालो, कालो ऐ कालो ऐ मिशे गेलो,

पञ्चतत्त्व प्रधान मत्त रङ्ग देखे भङ्ग दिले ॥

कमलाकन्तेर मन, आशा पूर्ण एतो दिने,

(ता ऐ) सुख दुख समान हलो आनन्द-सागर-उथले ॥